ओम् शान्ति 13-9-10 मधुबन

समर्पित भाईयों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– गुल्जार दादी

आज अमृतवेले बाबा के पास गई तो बाबा की दृष्टि लेते हुए बाबा की अमूल्य बांहों में समा गई। फिर थोड़े समय के बाद बाबा ने पूछा बच्ची आज क्या समाचार लाई हो ? तो हमने कहा बाबा आज तो सरेन्डर कुमारों की याद लाई हूँ। बाबा ने कहा कुमार तो बाबा को बहुत प्यारे हैं क्योंकि कुमार आलराउण्ड, सर्विसएबुल हैं। कुमारों को जो भी कार्य कहो वह कर सकते हैं। यज्ञ सेवा और विश्व सेवा दोनों में ही नम्बरवन बन सकते हैं। कुमारों को तो बाबा सदा आगे रखता है। तो आज इन्हों को वतन में बुलाता हूँ। तो बाबा का संकल्प करना और सभी का इमर्ज होना। तो आप सब वतन में पहुंच गये। और सभी 5 वी (V) के रूप में खड़े हो गये, फिर बाबा ने बहुत प्यार से दृष्टि दी, उस दृष्टि से ऐसे लग रहा था जैसे बाबा आपसे कोई प्रामिस ले रहे हैं। बाबा ने कहा बच्चे जानते हैं कि बाबा हमसे क्या चाहता है! बाबा कहे क्यों ? कुमारों की जो कम्पलेन निकलती है वह तो आप अच्छी तरह से जानते हो ना! तो बाबा ने कहा यह मेरे कम्पलेन वाले बच्चे नहीं, कम्पलीट बच्चे हैं। बाबा दृष्टि से देख रहे हैं कि इन्हों में उमंग बहुत है। तो बाबा एक मास के बाद कुमारों की रिजल्ट बतायेगा। फिर बाबा ने कहा कि कुमारों में बाबा की शुभ आशायें हैं। तो जैसे बाबा ने यह कहा तो सभी कुमार बाबा के आसपास ऐसे बैठ गये जैसे छोटे बच्चे आगे-पीछे साथ में लगकर बैठ जाते हैं। तो यह सीन भी बहुत अच्छी लग रही थी। फिर बाबा ने कहा कि बाबा की कुमारों से एक ही आश है, कुमारों को बाबा के गले का हार बनना है, हार नहीं खानी है। तो जो नजदीक बैठे थे उन्होंने अपनी बाहें बाबा के गले में हार जैसे डाल दी और दूर वाले भी अपनी बांहें ऐसे करने लगे। तो बाबा ने कहा जैसे सभी बांहों से नजदीक आने चाहते हो, ऐसे हर कुमार को बाबा बोल रहा है, कि आप विजयी कुमार हो। तो अमृतवेले उठते ही यह अपना स्वमान रोज़ याद करना कि मैं विजयी कुमार हूँ।

फिर बाबा ने कहा देखो कुमार सेन्टर पर सेवा के लिए रहते हैं। चाहे मन्सा वायुमण्डल बनाने की सेवा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा लेकिन सभी सेवाधारी हैं। तो सेवाधारियों को सेवा में सफलता की तीन बातें रोज़ चेक करनी हैः- 1- निमित्त भाव 2- निर्मान भाव और 3-निर्मल वाणी। यह तीन बातें बाबा ने पहले भी सुनाई हैं और आज भी याद दिला रहे हैं। बाबा ने कहा यह तीन वरदान हर एक अपने लिए स्पेशल समझना। अगर इन वरदानों को आप प्रैक्टिकल में लायेंगे तो एक सेवा में सफलता होगी, दूसरा जहाँ आप सेन्टर पर रहते हो उसके वायुमण्डल को भी अच्छा बना सकते हो।

फिर बाबा ने कहा बच्चे वतन में आये हैं तो बाबा वतन की सैर भी करायेंगे ना। तो बाबा ने कहा चलो अभी चक्र लगाते हैं। तो चक्र लगाते एक हाल में बाबा ले चला, वहाँ बहुत सुन्दर लाइट के चबूतरे थे, उन चबूतरों पर सभी बैठ गये। फिर बाबा ने कहा अभी बाबा तपस्या कराते हैं और चेक करते हैं कि जो आप कहते हो, कि ब्राह्मण लाइफ माना खुशी, तो वह खुशी की स्थिति सभी की कहाँ तक है ? दूसरा जो बाबा कहता है सेकण्ड में बिन्दी लगाओ, उस स्थिति की रिजल्ट क्या है ? और तीसरा - बिल्कुल अशरीरी भव। शरीर के भान से बिल्कुल फ्री होते हैं ? तीनों की रिजल्ट परसेन्टेज में सभी के मस्तक पर आ रही थी। तो बाबा ने देखा कि आधा रिजल्ट अच्छी थी। तो बाबा ने कहा अभी इस बात पर अटेन्शन देना। जो सोचो कि मेरी यह स्टेज होनी चाहिए वही स्टेज पूरी होनी चाहिए। अभी थोड़ी कम थी, फुल नहीं थी। तो बाबा ने कहा अभी इस पर पुरुषार्थ करना। फिर हाल से बाबा दृष्टि देते हुए बगीचे में ले चले और कुमारों को कहा अभी खूब फल खाओ। तो सभी वृक्ष से फल तोड़कर खाने लगे। सभी ने अपनी-अपनी पसन्दी का फल खाया। फिर बाबा ने सबको बगीचे में बिठाया और

दृष्टि देते कहा बच्ची इनके लिए सौगात क्या देंगी ? तो बाबा का कहना और सौगात आ गई। सौगात में कंगन थे और कंगन में तीन बातों की ही लिखत थी - 1-निमित्त 2-निर्मान और 3-निर्मल वाणी। बाबा ने एक एक को बुलाया और यह कंगन बांहों में डाला और कहा कि बाबा बांह में नहीं दिल में यह कंगन पहना रहा है। तो सदा यह तीन बातें याद रखना। यह कंगन उतारना नहीं, इसे दिल में याद रखना। ऐसे कहते यह सीन मर्ज हो गई और हम साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 13-9-10 मधुबन

''बाबा को चाहिए सच्चे और मीठे बच्चे, तो कुछ भी करो मीठा बनकर दिखाओ''

– दादी जानकी

ओम शान्ति। मेरा बाबा, मीठा बाबा... अव्यक्त होकर भी बाबा हमारे पर कितनी मेहनत कर रहा है। बाप, टीचर, सतगुरू रूप से बाबा कितनी मेहनत करके हमको विश्व की बादशाही देता है। आज बाबा ने कहा है मैं तुम बच्चों को ब्रह्माण्ड का भी मालिक बनाता हूँ, तो विश्व का भी मालिक बनाता हूँ। खुद विश्व का मालिक नहीं बनता। ब्रह्माण्ड जहाँ ब्रह्म महतत्व में आत्मायें अण्डे मिसल रहती हैं, उसकी नॉलेज देकर सालिग्राम बना देता है। पूर्णमासी के दिन सत्य नारायण की कथा सुनते हैं उसमें एक बूढ़ा ब्राह्मण दिखाते हैं, दूसरा फिर सालिग्राम की पूजा करते हैं।

दूसरा आज बाबा ने कहा है बच्चे मन का एक व्यर्थ संकल्प भी बहुत घाटा डालता है। एक संकल्प भी साधारण से व्यर्थ में आया, थोड़ी सी वाणी ऐसी हुई तो बहुत बड़ा नुकसान है। हम ब्राह्मण सबसे ऊंचे हैं जो डायरेक्ट परमात्मा से शक्ति लेते हैं। डायरेक्ट सर्वशक्तिवान परमात्मा हमें शक्ति दे रहा है तो कोई भी व्यर्थ संकल्प न आये। वाणी भी कभी साधारण न हो।

बाबा की याद माना बाबा के चरित्रों की याद, बाबा के महावाक्यों की याद और कोई याद न आये। कल जो बीता वह हो गया ना। वह भी याद नहीं है। बाबा सदा मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कहता है, तो कम से कम बाबा मुझे कहे ना मीठी बच्ची। बाबा को एक सच्चा चाहिए, दूसरा मीठा चाहिए। बाबा जो कराता है वह संगम पर मुझे अब करना है। अब नहीं तो कब नहीं।

बाबा कहता थी बच्चे लिखो कि पवित्रता के योगबल से स्थापना होनी है। प्युरिटी की गहराई में जाओ, जरा भी व्यर्थ साधारण संकल्प भी इमप्युअर बना देते हैं। बहुतकाल से प्युअर, पॉजिटिव संकल्प की शक्ति ऐसी हो तो बाबा उसे सेवा में अपना साथी बना लेता है। बच्चा गुप्त रहता है, पर बाबा बच्चे को आगे रखकर सारा काम करा लेता है। बच्चा कहता है बाबा मैं सावधान, होशियार, खबरदार रहूं, जो आपका नाम बाला करूं।

मधुबन हमको सहारा भी दे रहा है, सद्बुद्धि भी दे रहा है। मधुबन न होता तो आत्मायें बिचारी कहाँ भटकती। भले वहाँ रहते कितना भी याद करें फिर भी कर्मबन्धन है। मधुबन मुक्ति, जीवनमुक्ति धाम का रास्ता बताता है। मुक्ति जीवनमुक्ति हमें वर्से में मिली है, हक लगाकर बाबा के पास बैठ गये हैं। कभी कहीं जाने का ख्याल नहीं आया। तो इतना नशा है कि मधुबन हमारा प्यारा है, बाबा इतना मीठा है, हमको क्या करने का है ? मैं समझती हूँ – 24 घण्टा और सब बातों को भूल, पक्का करो – मुझे मीठा बनना है, मीठा बनना है। संकल्प करेंगे, तो भले कुछ भी कारण बन जाये मीठा रहेंगे। कुछ भी होता है मुख से न बोलूं, पर मुस्कराऊं। इसके लिए अच्छी तरह से ध्यान देना पड़ेगा।

बाबा ने पुरुषार्थ करने के लिए हम सबको स्वतन्त्र बनाया है, जितना चाहे उतना अभी कर लो। नींद करो न करो, तुम्हारी मर्जी। नींद तो सतयुग में भी कर लेंगे, नींद तो हैवान भी करते हैं, अब हमको क्या करना है! जो करना है अब कर लो, बाबा कराता है, हमको करना है, और कोई बात है ही नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।